॥ बुद्धम शरणम गच्छामि ॥

Chalisamantras.com

जब दुःख की घड़ियाँ आये
सच पर झूठ विजय पाए
इस निर्मल पावन मन पर
जब कलंक के घन छाये
अन्याय की आंधी से
कान उठे जब तेरे दोल
तब मानव तो मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि
तब मानव तो मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मं शरणम गच्छामि
सघं शरणम गच्छामि.

जब दुनिया से प्यार उठे
जब दुनिया से प्यार उठे
नफ़रत की दीवार उठे
माँ की ममता पर जिस दिन
बेटे की तलवार उठे
धरती की काया काँपे
अम्बार डगमग उठे दोल
तब मानव तू मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि
तब मानव तू मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि.

दूर किया जिस ने जनजान के
व्याकुल मन का अँधियारा
जिसकी एक किरण को छूकर
चमक उठा ये जग सारा
दिप सत्य का सदा जले

दया अहिंसा सदा पहले
सुख शांति की छाया में
जन गण मन का प्रेम पीला
भारत के भगवान
बुद्धा का गूँजे
घर घर मात्र अमोल
हे मानव नित् मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि
हे मानव नित् मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि.

रूठ गया जब सुन ने वाला
किस से करूँ पुकार
प्यार कहाँ पहचान सका ये
ये निर्दय संसार.

निर्दयता जब ले ले धाम
दया हुई हो अन्तर्ध्यान
जब ये छोटा सा इंसान
भूल रहा अपना भगवान
सत्य तेरा जब घबराए
श्रद्धा हो जब डावांडोल
तब मानव तू मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि
तब मानव तू मुख से बोल
बुद्धम शरणम गच्छामि.

Chalisamantras.com

Chalisamantras.com